



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जौनसार—बावर क्षेत्र मं प्रचलित खुमड़ी व्यवस्था : एक समीक्षात्मक अध्ययन

रिंकूदास

सहायक प्राध्यापक

राजनीति विज्ञान विभाग

सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय (पी0जी0) कॉलेज साहिया , देहरादून

सारांश:

जौनसार बावर के समाज में खुमड़ी (पंचायत) व्यवस्था प्राचीन समय से प्रचलन में है। यह व्यवस्था जौनसार बावर की न्यायिक संस्था है तथा जौनसार बावर के समाज को एक सूत्र में बाँधने का कार्य भी करती है। खुमड़ी का नेतृत्व स्याणा (मुखिया) द्वारा किया जाता है इसलिए इस व्यवस्था को स्याणाचारी व्यवस्था भी कहा जाता है। पीड़ित व्यक्ति अथवा न्याय की मांग करने वाला व्यक्ति स्याणा को मात्र एक रुपया नाइस (नालिस) शुल्क देकर न्याय की माँग करता है, जिसके लिए स्याणा खुमड़ी (पंचायत) बैठाता है। जौनसार बावर के समाज को न्यायपूर्ण बनाने हेतु यह व्यवस्था प्राचीन समय से वर्तमान समय तक अपनी अहम भूमिका निभाती रही है। ब्रिटिश सरकार ने भी इस व्यवस्था को बनाए रखा और अपने प्रशासनिक कार्यों के संचालन में खुमड़ी व्यवस्था का सहयोग प्राप्त कर इसका समर्थन किया। प्रस्तुत भाष्य पत्र के माध्यम से खुमड़ी व्यवस्था का ऐतिहासिक एवं समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है तथा खुमड़ी व्यवस्था को विविधताओं एवं सीमाओं पर ध्यानाकर्षण किया गया है। वर्तमान समय में खुमड़ी व्यवस्था में महिलाओं तथा कमजोर वर्गों की सक्रिय सहभागिता की कमी को अनुभव किया गया है जिसमें सामाजिक एवं राजनीतिक सुधार की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द— खुमड़ी, नालिस, बि"टाड़ा, पूठ, डाण्ड, त्याड़ा, स्याणा, स्याणाचारी व्यवस्था, चौतरू, खत स्याणा, जातीय वर्चस्व, रुढ़िवादी।

प्रस्तावना —

जौनसार—बावर उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून जनपद का एक परगना है। जौनसार बावर अपनी अनूठी संस्कृति के लिए सुविख्यात है। यही कारण है कि भारत सरकार द्वारा इस क्षेत्र को सन् 1967 में जनजाति क्षेत्र घोषित किया गया है। भौगोलिक दृष्टि से जौनसार—बावर क्षेत्र 30°31' से 31°33' उत्तरी अक्षांश तथा 77°45' से 78°72' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।¹ अपनी भौगोलिक व सांस्कृतिक विशिष्टता के कारण यह क्षेत्र शोधार्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। लगभग अण्डाकार में बसे इस क्षेत्र के उत्तर—पूर्व की ओर टोंस नदी प्रवाहित होती है जो प्रारंभ में उत्तरकाशी व बाद में हिमाचल प्रदेश के साथ सीमा बनाती हुई दक्षिण की ओर आकर हरिपुर व डाकपत्थर के बीच यमुना नदी में मिलती है। यमुना नदी जौनसार बावर के पूर्वी छोर पर प्रवाहित होते हुए जौनसार—बावर व टिहरी गढ़वाल के साथ सीमा बनाती है। दक्षिण में यमुना नदी जौनसार बावर से बाड़वाला को अलग करती है। इस प्रकार यमुना व टोंस नदी के मध्य में बसे इस जनजातीय क्षेत्र जौनसार बावर की अपनी अलग सांस्कृतिक विशिष्टता है। इस जनजातीय क्षेत्र जौनसार—बावर में प्राचीन समय से वर्तमान समय तक न्याय व्यवस्था बनाये रखने के लिए खुमड़ी व्यवस्था विद्यमान रही है। स्याणाओं द्वारा संचालित इस व्यवस्था को स्याणाचारी व्यवस्था भी कहते हैं। जौनसार बावर प्रशासनिक दृष्टि से वर्तमान में तीन तहसीलों — कालसी, चकराता व त्यूनी में बंटा हुआ है। स्थानीय स्वायत्त शासन के लिए भले ही त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था प्रचलन में है फिर भी यहाँ न्याय व्यवस्था का कार्य प्राचीन समय से विद्यमान खुमड़ी व्यवस्था के द्वारा ही किया जाता है। गाँव का मुखिया गाँव स्याणा, गाँव स्याणा से अधिक शक्तिशाली खाग स्याणा (एक पट्टी/खत के आधे गाँव का स्याणा) होता है। खत स्याणा का अधिकार क्षेत्र, खाग स्याणा से अधिक है यह अनेक गाँव से मिलकर बनी खत का नेतृत्व करता है जिसे सदर स्याणा भी कहते हैं। अपने—अपने अधिकार क्षेत्रों में इन स्याणाओं द्वारा खुमड़ी व्यवस्था के तहत न्यायिक कार्यों के साथ—साथ राजस्व

एकत्रीकरण का कार्य भी किया जाता था। गांव का स्याणा गांव वासियों से राजस्व एकत्रित करता था। खत स्याणा खत में कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी निभाता था और मालगुजारी वसूल करने का उन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा अधिकार प्राप्त था।²

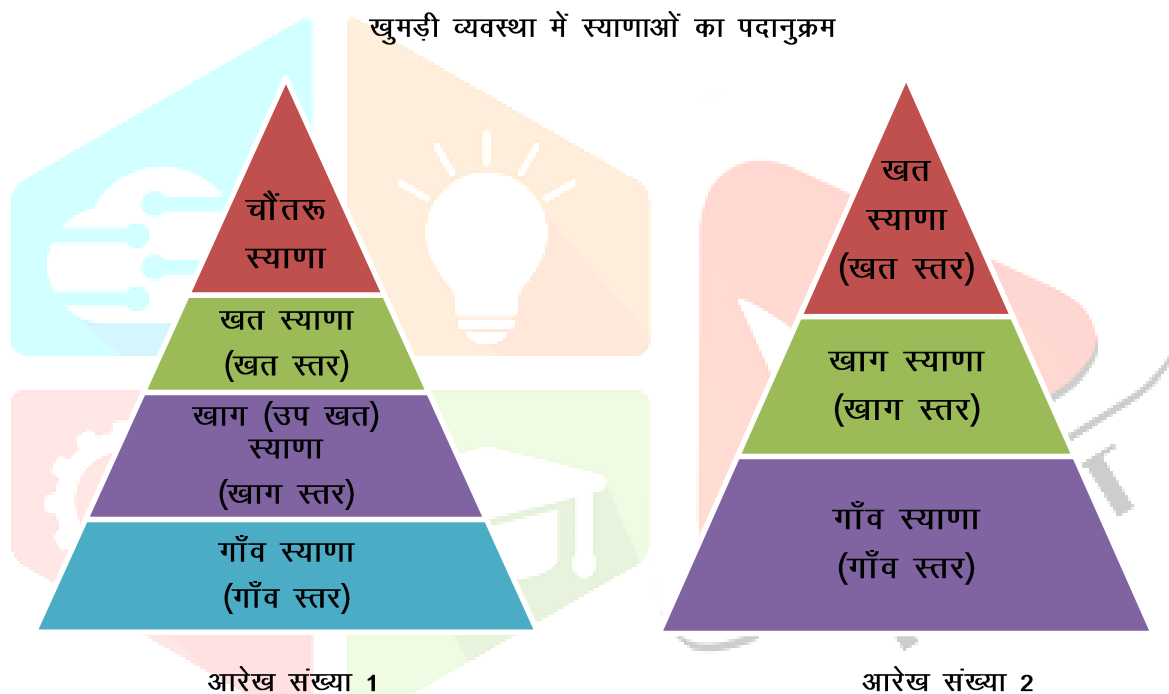
खुमड़ी व्यवस्था की संकल्पना – जौनसार बावर क्षेत्र में खुमड़ी व्यवस्था का उद्भव प्राचीन समय से ही माना जाता है। इस क्षेत्र में जब से आदिम कबीलों ने निवास करना प्रारंभ किया तथा कालांतर में उनकी बढ़ती परस्पर निर्भरता, अराजकता तथा नागरिकों की जीवन सुरक्षा हेतु स्याणाचारी व्यवस्था का प्राकट्य हुआ। स्याणाचारी व्यवस्था, राज्य स्थापना के सामाजिक समझौते से मेल खाती है। प्रारंभ में स्याणाओं की नियुक्ति जनता द्वारा सर्व सहमति से हुई तत्पश्चात स्याणा पद वंशानुगत हो गया। यद्यपि स्याणा का पद वंशानुगत है तथापि जनता अन्यायी, अयोग्य व तानाशाही स्याणा को बदलकर सर्व सहमति से नये स्याणा का चुनाव कर सकती है। न्याय चाहने वाला कोई भी व्यक्ति गांव के स्याणा के पास एक रुपया शुल्क (नालिस) जमा कर पंचायत बैठाने की मांग कर सकता है। गांव स्याणा दोनों पक्षों (वादी व प्रतिवादी) का खुमड़ी (पंचायत) बैठने की तिथि की सूचना देता है। खुमड़ी में गांव के पंच दोनों पक्षों को सुनकर न्यायिक निर्णय देते हैं तथा गांव स्याणा उन्हें न्याय बता देता है।³ इस प्रकार खुमड़ी व्यवस्था में व्यक्ति न्याय प्राप्त करता है।

खुमड़ी व्यवस्था की प्रक्रिया – खुमड़ी व्यवस्था, जौनसार बावर क्षेत्र में कानून निर्माण व क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह व्यवस्था न केवल न्यायिक संस्था के रूप में बल्कि सामाजिक समस्याओं के समाधान में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाती रही है और यही कारण है कि खुमड़ी व्यवस्था पर आज भी जौनसार बावर के लोगों का अटूट विश्वास है।⁴ यद्यपि खुमड़ी व्यवस्था के संचालन एवं निर्णयों का लिखित संविधान नहीं है तथापि खुमड़ी व्यवस्था का संचालन परम्परागत रूप से इस क्षेत्र में होता है। खुमड़ी में लिए गए पूर्व के निर्णयों को लोग मौखिक रूप से याद करते हैं तथा उन्हें आधार मानकर आगामी वाद पर फैसला सुनाते हैं। खुमड़ी व्यवस्था संचालन की प्रक्रिया निम्नानुसार है –

1. नालिस (नाइस) देना – नालिस(याचिका) लेकर जब पीड़ित व्यक्ति स्याणा के पास जाता है तब उसे खुमड़ी (पंचायत) बैठाने का शुल्क जमा करना होता है। यह शुल्क मात्र एक रुपए होता है जिससे नालिस (नाइस) रुपया कहते हैं।
2. खुमड़ी की सूचना – वादी द्वारा दी गई नालिस को जब स्याणा स्वीकार कर लेता है तब स्याणा खुमड़ी की तिथि भी तय कर देता है। तय तिथि के अनुसार खुमड़ी बैठती है जिसकी सूचना डाकी (बाजगी) समुदाय के व्यक्ति द्वारा संबंधी वादी व प्रतिवादी तथा गांव वासियों को देता है।
3. खुमड़ी में प्रतिभाग – खुमड़ी की सूचना मिलने के पश्चात् प्रत्येक परिवार का मुखिया अथवा परिवार का प्रतिनिधि खुमड़ी में शामिल होता है। खुमड़ी में उपस्थित समस्त व्यक्तियों को प्रश्न पूछने एवं सुझाव प्रकट करने का समान अधिकार होता है।
4. बिश्टाड़ा – खुमड़ी में पंचों द्वारा न्याय चाहने वाले दोनों पक्षों (वादी व प्रतिवादी) पर एक शुल्क लगाया जाता है जिसे बिश्टाड़ा कहा जाता है। खुमड़ी के पश्चात् पंच इस शुल्क को आपस में बाँट लेते हैं। यह एक प्रकार से पंचों का हर्जाना होता है।⁵
5. उश्टाड़ा – उश्टाड़ा एक ऐसा शुल्क है जो खुमड़ी के समापन अथवा भंग करने पर दोनों पक्षों से लिया जाता है जिसमें दोनों पक्ष दिए गए निर्णय के प्रति असंतोष और असहमति प्रकट करते हैं। उश्टाड़ा शुल्क को खुमड़ी में उपस्थित सभी व्यक्तियों में बाँटा जाता है।
6. पूठ – खुमड़ी में यदि पंचों को लगता है कि वादी व प्रतिवादी दोनों ही पंचों का निर्णय नहीं मांगेंगे, ऐसी स्थिति में दोनों पक्षों से मोटी रकम लेने का नियम है जिसे पूठ कहते हैं। निर्णय सुनाने के पश्चात् यदि कोई भी पक्ष निर्णय को नहीं स्वीकारता तब पूर्व में पूठ के रूप में जमा धनराशि वापस नहीं लौटाई जाएगी।
7. बरो-बाकरा – इस परम्परा के अनुसार बड़े स्तर की खुमड़ी में जब निर्णय देने में अधिक दिन लगते हैं तथा खुमड़ी कई दिनों तक बैठती है तब इस दौरान स्याणा व पंचों के राशन व बकरे की व्यवस्था करना बरो बाकरा कहलाता है। इसकी व्यवस्था दोनों पक्ष मिलकर समान रूप से करते हैं।
8. डाण्ड (दण्ड) – खुमड़ी में जब किसी व्यक्ति पर अपराध सिद्ध हो जाता है तब स्याणा द्वारा अपराधी पक्ष को दण्डित किया जाता है। इस प्रकार अपराधी पक्ष पर आर्थिक दण्ड लगाया जाता है जिसे डाण्ड (अर्थदण्ड) कहा जाता है।
9. देवघड़ना – खुमड़ी में दिया गया निर्णय अथवा न्याय यदि दोनों पक्ष नहीं मानते हैं और दोनों पक्ष एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते हैं, तब उस स्थिति में अंतिम फैसला देवता पर छोड़ दिया जाता है। पंच जिस पक्ष को अपराधी मानते हैं उससे देव मंदिर में देवता को साक्षी मानकर शपथ (कसम) दिलाई जाती है। यह शपथ जलते हुए दीपक को बुझाकर अथवा लोटा-नमक रस्म पूरी कर दिलाई जाती है।
10. त्याड़ा – खुमड़ी में जब वादी अथवा प्रतिवादी पर अपराध सिद्ध हो जाए तब पंचों द्वारा संबंधित अपराधी पक्ष पर आर्थिक दण्ड लगाया जाता है। यदि अपराधी पक्ष इस निर्णय का विरोध करता है तथा डाण्ड नहीं चुकाए तब स्याणा उस अपराधी पक्ष व उसके परिवार को सामाजिक बहिष्कार की सजा सुनाई जाती है जिसे स्थानीय भाषा में त्याड़ा

कहा जाता है। त्याड़ा रखे गये परिवार के साथ किसी भी प्रकार की सामाजिक गतिविधियों एवं संस्कारों में समाज सम्मिलित नहीं होता है। खुमड़ी के निर्णय मनवाने का यह अंतिम तरीका है।

स्याणाओं का पदसोपान – खुमड़ी व्यवस्था प्राचीन समय से ही जौनसार बावर एवं इसके सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रशासनिक कार्यों तथा न्यायालय की भांति व्यवहार में रही है। खुमड़ी व्यवस्था त्रि-स्तरीय व्यवस्था है – गांव स्तर, खाग स्तर तथा खत स्तर। तीनों ही स्तरों पर नेतृत्व कर्ता स्याणा क्रमश – गांव स्याणा, खाग स्याणा तथा खत (सदर) स्याणा है। लोक मान्यतानुसार 16वीं शताब्दी में चौतरु स्याणा नामक नवीन पद का सृजन किया गया। सिरमौर रियासत के राजाओं ने 1616 ई० से पूर्वार्द्ध से ही चौतरु स्याणा के पद को प्रशासनिक अंग बना लिया था। चौतरु स्याणा, खत स्याणा से अधिक शक्तिशाली होते थे। चौतरु स्याणा के पद में न्यायिक कार्यों की शक्तियों के साथ-साथ खतों पर राजस्व निर्धारण तथा एकत्रीकरण की शक्तियाँ भी निहित थी। चौतरु स्याणाओं ने खतों पर राजस्व निर्धारण करने में पक्षपाती व्यवहार किया। चौतरु स्याणाओं ने अपने न्यायिक अधिकारों से खतों में भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया। इनके न्यायिक अधिकार भ्रष्टाचार के अपरिहार्य स्रोत थे। चौतरु स्याणाओं के प्रति लोगों में आक्रोश बढ़ चुका था। परिणाम यह हुआ कि मिस्टर रौस ने अपने भूमि बंदोबस्त में चौतरु स्याणा पद समाप्ति की मांग रखी। इस प्रकार सन् 1849 में चौतरु स्याणा पद समाप्त कर दिया गया तथा उनके अधिकार खत स्याणाओं को सौंप दिए गए।⁶ खुमड़ी व्यवस्था के प्रशासन में स्याणाओं का पदानुक्रम–



खुमड़ी व्यवस्था के संचालन अथवा प्रशासन में स्याणाओं की शक्तियों का प्रयोग पदसोपान के अनुरूप ऊपर से नीचे की ओर अपने अधीनस्थ स्याणाओं पर होता है (आरेख सं० 1 व 2)। चौतरु स्याणा, सबसे शक्तिशाली स्याणा हुआ करते थे। सिरमौर रियासत में सृजित चौतरु स्याणा के चार पद – टिटियाणा (हिमाचल प्रदेश), टौरु-भैला (हिमाचल प्रदेश) धाईरा (जौनसार बावर) तथा मुन्धान (जौनसार बावर) में स्थापित थे। कालान्तर में जौनसार बावर में दो और चौतरु स्याणा के पद नगरु तथा लखवाड़ में सृजित किए गए। एटकिंगसन चौतरु स्याणा के बारे में लिखते हैं कि, “जौनसार बावर में चार सबसे ज्यादा प्रभावशाली स्याणे चौतरा स्याणा कहलाते हैं।” भ्रष्टाचार में संलिप्तता पाए जाने पर चौतरु स्याणाओं के पद समाप्त कर दिए गए। वर्तमान में, चौतरु स्याणा खुमड़ी व्यवस्था का अंग नहीं है। खुमड़ी व्यवस्था वर्तमान में – गांव स्याणा, खाग स्याणा तथा खत स्याणा के द्वारा संचालित होती है।

ब्रिटिश शासन काल में खुमड़ी व्यवस्था – जौनसार बावर परगना 1809 ई० तक सिरमौर राजा के अधीन रहा। सन् 1809 से 1815 तक इस क्षेत्र पर गोरखा शासकों ने शासन किया। गोरखा शासकों को ब्रिटिश सेना ने युद्ध में परास्त कर दिया और सिरमौर रियासत पर ब्रिटिश सेना ने अपने अधीन राजा का शासन 6 वर्षीय फतेह प्रकाश (1815–1850 ई०) को सौंपकर तथा जौनसार बावर क्षेत्र को युद्ध के हर्जाने के रूप में अपने शासनाधीन रखा। गोरखा व अंग्रेजी सेना के मध्य 2

दिसम्बर 1815 को हुई सिंगाली की संधि के पश्चात् जौनसार बाबर क्षेत्र पर ब्रिटिश आधिपत्य स्थापित हुआ। ब्रिटिश सरकार ने इसे क्षेत्र में पूर्व से विद्यमान खुमड़ी व्यवस्था को पूर्ववत् बनाए रखा। स्याणा ब्रिटिश सरकार का समर्थन करते थे तथा राजस्व वसूली एवं क्षेत्र में न्याय व्यवस्था बनाए रखने में ब्रिटिश सरकार की सहायता करते थे। ब्रिटिश काल में चौतरु स्याणा बहुत शक्तिशाली रहे। चौतरु स्याणा अपने अधीनस्थ स्याणाओं के माध्यम से राजस्व वसूली करते थे। ब्रिटिश काल में खुमड़ी व्यवस्था अपने चमोत्कर्ष पर थी। इस काल में चौतरु स्याणा भ्रष्टाचार में लिप्त हो गये तथा लोगों पर चौतरु स्याणाओं का अत्याचार बढ़ने लगा परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार के अधीक्षक मिस्टर रौस ने चौतरु स्याणा के पद को समाप्त कर दिया तथा चौतरु स्याणा के भाक्ति एवं कार्यों का विभाजन खत स्याणाओं में कर दिया। ब्रिटिश सरकार ने खुमड़ो व्यवस्था को बनाए रखा तथा यथोचित सुधारात्मक प्रयास किए।

खुमड़ी व्यवस्था की विशिष्टता – खुमड़ी व्यवस्था को प्रमुख विशिष्टता निम्नलिखित है—

1. सस्ता व सुलभ न्याय – खुमड़ी व्यवस्था में व्यक्ति ग्रामीण स्तर पर ही मात्र एक रुपए नालिस (नाइस) शुल्क जमा कर न्याय की याचना कर सकता है।
2. स्थानीय लोगों का प्रतिनिधित्व – खुमड़ी व्यवस्था स्थानीय लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करती है। प्रत्येक परिवार का प्रतिनिधि खुमड़ी व्यवस्था में प्रतिभाग करने का पात्र होता है।
3. लोकतांत्रिक मूल्यों का समावेश – इस व्यवस्था में जनता पंचों एवं स्याणा से प्रश्न पूछ सकते हैं तथा पंच व स्याणा जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं। स्याणा का चयन जनता द्वारा ही सामाजिक समझौते एवं सामूहिक सहमति से किया जाता है।
4. सामाजिक एकता को बढ़ावा – खुमड़ी व्यवस्था सामाजिक एकता स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करती है। समाज में यदि कोई वैमनस्यता है तो खुमड़ी बुलाकर उसे दूर कर एकता स्थापित करने पर बल दिया जाता है।
5. सामूहिक सुरक्षा की द्योतक व्यवस्था – यदि किसी गांव अथवा खत पर किसी बाहरी व्यक्ति द्वारा आक्रमण किया जाता है तब खुमड़ी इस आक्रमण को प्रत्येक पर किया गया आक्रमण मानती है। खुमड़ी सामूहिक सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु पीड़ित व्यक्ति के पक्षधर होकर न्याय हेतु मांग करती है।
6. सामाजिक क्रियाकलापों में सहभागिता— खुमड़ी व्यवस्था की एक और विशेषता यह है कि समाज में धार्मिक व वैवाहिक कार्यक्रमों एवं स्थानीय उत्सवों में सामूहिक एकता का बनाए रखते हुए खुमड़ी बुलाकर दायित्वों का निर्वहन किया जाता है।
7. न्यायिक एवं सामाजिक कार्यों का नियमन – खुमड़ी व्यवस्था में न्यायिक गतिविधियों के संचालन के साथ-साथ वैवाहिक नियमों, जीवन-मृत्यु संबंधित संस्कारों एवं सामाजिक कार्यों का नियमन भी किया जाता है।

आलोचना –

जौनसार बाबर क्षेत्र में प्रचलित खुमड़ी व्यवस्था अपने उद्भवकाल से ही इस क्षेत्र की न्यायिक एवं सामाजिक गतिविधियों का संचालन करती आयी है। यद्यपि यह सर्वज्ञ है कि खुमड़ी व्यवस्था पर जौनसार बाबर के लोगों का अटूट विश्वास है। तथापि यह भी देखा गया है कि खुमड़ी व्यवस्था में प्राचीन काल, ब्रिटिश काल व उसके उपरान्त वर्तमान काल तक अनेकों अवगुण पाए गए हैं जिनके आधार पर इसकी आलोचना हाती है –

1. पितृसत्तात्मक व्यवस्था – खुमड़ी व्यवस्था एक पितृसत्तात्मक व्यवस्था है। इसमें केवल पुरुषों की ही सहभागिता है। स्याणा पद वंशानुगत है जिसमें की पद पिता के बाद उसके उत्तराधिकारी पुत्र को प्राप्त होता है।
2. नारी उपेक्षा – सामाजिक दृष्टि से जौनसार बाबर की महिलाओं को सदैव सम्माननीय दृष्टि से देखा जाता है। इसके प्रमाण आज भी यहां के समाज में दृष्टिगोचर होते हैं। जेष्ठ पुत्र के विवाह में गांव की विवाहित महिला (रईण) के लिए विशेष भोजन (रईणी भोज) एवं आदर सत्कार की परंपरा है परंतु इसके उपरान्त भी खुमड़ी व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता नहीं है। महिलाओं को खुमड़ी में कोई पद देय नहीं है। महिला लैंगिक भेदभाव के कारण न तो स्याणा के पद पर आसीन हो सकती है न ही पंच व आम सदस्य की भांति खुमड़ी में भागीदारी बन सकती है। इससे खुमड़ी व्यवस्था में नारी की उपेक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। यद्यपि यह परंपरा है कि किसी विवाद में यदि महिला खुमड़ी में आकर अपना डॉटू (सिर पर पहना जाने वाला परिधान) प्रतिवादी के चरणों में रख दें तो विवाद पर चर्चा समाप्त कर दी जाती है तथा फैसला कर लिया जाता है। तथापि खुमड़ी में सामाजिक विकास एवं संचालन हेतु निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में खुमड़ी व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी लैंगिक भेदभाव के कारण शून्य है।
3. जातीय वर्चस्व एवं कमजोर वर्ग का शोषण – खुमड़ी व्यवस्था का एक और अवगुण जातीय वर्चस्व का है। कठोर वर्ण-व्यवस्था के चलते अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों पर सवर्ण वर्ग का वर्चस्व है। रूढ़िवादी कुरीतियों तथा जातीय बंधनों के कारण प्राचीन समय से ही कमजोर वर्ग पर खुमड़ी व्यवस्था में अत्याचार होते आए हैं। लेखक जयसिंह रावत अपनी पुस्तक 'उत्तराखण्ड : जनजातियों का इतिहास' में उत्तर प्रदेश सरकार की कोल्टा जाँच समिति का संदर्भ देते हुए लिखते हैं कि "खुमड़ी और खत पंचायतें, जिन्हें परम्परानुसार न्यायिक अधिकार भी प्राप्त थे,

कोल्टाओं के शोषण और उत्पीड़न का जरिया भी थी।⁸ कोल्टा अनुसूचित जाति की उप-जाति है। इस प्रकार सवर्ण जाति के लोगों द्वारा कोल्टा जाति के लोगों को अपना दास बनाया जाता था विरोध करने पर खुमड़ी व्यवस्था के माध्यम से उस शोषित वर्ग को यातनाएँ दी जाती थी।

4. अंधविश्वास व रूढ़िवादी को पोषित करने वाली व्यवस्था – खुमड़ी व्यवस्था का एक दुर्गुण यह है कि इसमें रूढ़िवादी परम्पराओं – वर्ण-व्यवस्था, छुआ-छूत, धार्मिक स्थलों पर जातीय वर्जनाओं को अवैध नहीं माना जाता है। जिससे यह कुरीतियाँ और अधिक प्रबल होती है। खुमड़ी व्यवस्था में जब वादी व प्रतिवादी में कोई दोषी सिद्ध नहीं होता है अथवा कोई निर्णय नहीं निकलता है, तब उस विवाद का निर्णय दैवीय शक्तियों पर छोड़ दिया जाता है। वादी व प्रतिवादी में दोषी सिद्ध करने के लिए दोनों पक्षों से देवता की शपथ दिलाई जाती है जिसके लिए 'लोटा नमक' व 'देवघड़ना' रस्म पूरी कराई जाती है। इन दोनों कसम की रस्मों से दोषी व्यक्ति के साथ-साथ उसके परिवार के अन्य लोगों को भी दैवीय हानि का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार के निर्णय रूढ़िवाद एवं अंधविश्वास को पोषित करते हैं।
5. स्याणाओं का पक्षपाती निर्णय – खुमड़ी व्यवस्था की आलोचना इस आधार पर भी होती है कि इतिहास में चौतरु स्याणाओं ने तथा खत स्याणाओं ने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया था। इन स्याणाओं ने पक्षपात करके राजस्व निर्धारण व उसकी अनुचित उगाही की थी जिससे लोगों में स्याणाओं के प्रति आक्रोश उत्पन्न हो गया था। वर्तमान समय में भी खुमड़ी व्यवस्था में कतिपय निर्णय राजनीति से प्रेरित व पक्षपाती होते हैं।
6. वंशानुगत व्यवस्था – खुमड़ी में जनता द्वारा जिस परिवार से स्याणा चुन लिया जाता है उसी परिवार से ही भविष्य में स्याणा पद वंशानुगत हस्तान्तरित होता है। इस प्रकार समाज के अन्य परिवार स्याणा पद व खुमड़ों के नेतृत्व से वंचित रह जाते हैं।
7. पंचायतीराज व्यवस्था का अतिक्रमण – जौनसार बावर क्षेत्र में वर्तमान समय में परम्परागत पंचायतों (खुमड़ी व्यवस्था) के साथ-साथ आधुनिक पंचायतीराज व्यवस्था भी विद्यमान है। जहाँ परम्परागत पंचायतों में महिलाओं की सहभागिता नहीं है वहीं पंचायतीराज व्यवस्था के अनुसार इस क्षेत्र में महिलाओं को 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित की गयी हैं। खुमड़ी व्यवस्था पंचायतीराज व्यवस्था के चुनाव, चुनाव प्रक्रिया एवं उम्मीदवारों के चयन संबंधी निर्णयों को करती है जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास होता है। त्रि-स्तरीय पंचायतीराज व्यवस्था के अनेकों जनप्रतिनिधि खुमड़ी व्यवस्था के माध्यम से निर्विरोध निर्वाचित किया जाते हैं जिससे बहुत से उम्मीदवार प्रत्याशी बनने तथा मतदान करने के अधिकार से वंचित हो जाते हैं। प्रायः खुमड़ी व्यवस्था द्वारा चुने गए प्रतिनिधि के चुनाव में महिलाओं की भागीदारी नगण्य होती है जिससे महिलाओं के मताधिकार का हनन होता है। इस प्रकार खुमड़ी व्यवस्था, भारत में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के लिए प्रतिबद्ध पंचायतीराज व्यवस्था का अतिक्रमण करती है।

निष्कर्ष

खुमड़ी व्यवस्था जनजातीय क्षेत्र जौनसार बावर में अपने उद्भवकाल से वर्तमान समय तक प्रभावी रूप से विद्यमान है। खुमड़ी व्यवस्था अनेकों उतार-चढ़ाव के उपरान्त आज भी इस क्षेत्र में लोकप्रिय न्यायिक व्यवस्था के रूप में प्रचलन में है। यद्यपि पंचायतीराज व्यवस्था इस क्षेत्र में उत्तर प्रदेश राज्य के समय से लागू है तथापि अनेकों सामाजिक कार्यों, न्यायिक कार्यों हेतु जनता आज भी खुमड़ी व्यवस्था को ज्यादा स्वीकार्यता प्रदान करते हैं। प्राचीन काल से चली आ रही इस अनूठी खुमड़ी व्यवस्था पर जनता का अटूट लगाव व विश्वास है। वर्तमान समय में खुमड़ी व्यवस्था में अनेकों आमूल-चूल परिवर्तन एवं सुधारों की आवश्यकता है। पंचायतीराज व्यवस्था में जहाँ महिलाओं की सहभागिता में पूर्व की अपेक्षा वर्तमान समय में वृद्धि हुई है वहीं खुमड़ी व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता लैंगिक भेदभाव के कारण आज भी भ्रूण्य है। खुमड़ी व्यवस्था को लोकतांत्रिक एवं व्यावहारिक बनाये रखने हेतु मूलभूत सुधारों की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. शाह, टीकाराम, जौनसार बावर ऐतिहासिक संदर्भ, पृष्ठ सं०– 25, विन्सर पब्लिशिंग कम्पनी, 2016
2. चौहान, बालू एवं डॉ० राजकुमारी चौहान, जौनसार बावर की दिवंगत विभूतियाँ, पृष्ठ सं०– 117, अक्षर संयोजन एवं मुद्रण प्रियंका ग्राफिक प्रिंटर, 2013
3. शाह, टीकाराम, पूर्वोक्त, पृष्ठ सं०– 328
4. नेगी, गिरधर सिंह एवं मंजुल जोशी, मध्य हिमालय जौनसार बावर आँचल (कल और आज) जौनसारी जनजाति का समग्र अध्ययन, पृष्ठ सं० –95, मल्लिका बुक, 2010
5. शाह, टीकाराम, पूर्वोक्त, पृष्ठ सं०– 329
6. विलियम्स, जी० आर० सी०, देहरादून का इतिहास, प्रकाश थपलियाल द्वारा अनुवादित, पृष्ठ सं०– 181, उत्तराखंड प्रकाशन, 2021
7. एकिंगसन, एडविन टी०, हिमालयन गजेटियर, पृष्ठ सं०– 344, उत्तरायण प्रकाशन हिमालय संचेतना आदिबट्टी, 1998
8. रावत, जयसिंह, उत्तराखंडरु जनजातियों का इतिहास, पृष्ठ सं०– 105, विन्सर पब्लिशिंग कम्पनी, 2013